

# Psychopathologies of Everyday Life

सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ-न-कुछ भूलें करता है। इसमें से कुछ भूलें ऐसी होती हैं, जिनका हमें ज्ञान होता है तथा हम तुरंत ही उन भूलों में सुधार कर लेते हैं। परन्तु कुछ भूलें ऐसी होती हैं जिसे व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अज्ञानतावश तथा अनायास कर बैठता है। ये ऐसी भूलें हैं जो व्यक्ति को निरुद्देश्य (unpurposeful) तथा मात्र संयोगवश (just by chance) होने लगता है। फ्रायड (Frued) के अनुसार ऐसी भूलें अनायास नहीं होती है बल्कि उनका कारण होता है जो अचेतन (unconscious) में दमित (repressed) होता है। अचेतन में दमित विरोधी विचार (contradictory thoughts), कामुक इच्छाएँ (sexual desires), अतृप्त इच्छाएँ (unpurposeful), आक्रामक प्रवृत्तियाँ (aggressive tendencies) ही इन भूलों का कारण होती है। अचेतन में दमित ऐसी प्रवृत्तियाँ इन गलतियों या भूलों द्वारा चेतन में अभिव्यक्त (expressed) होती हैं। ऐसी गलतियों को ही फ्रायड ने 'दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ' (Psychopathologies of everyday life) कहा है। फ्रायड ने अपनी पुस्तक 'साइकोपैथोलॉजी ऑफ एवरीडे लाइफ' 'Psychopathology of Everyday Life' जो 1914 में प्रकाशित हुआ, इन मनोविकृतियों का विस्तृत वर्णन किया है। फ्रायड (Freud) ने अनेकों तरह की मनोविकृतियों (Psychopathologies) का वर्णन किया है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है -

- (1) बोलने की भूलें (Slip of tongue) :- प्रायः यह देखा गया है कि दैनिक जीवन में व्यक्ति से बोलने की भूलें हो जाया करती है। वह बोलना कुछ चाहता है और बोल कुछ और ही देता है। ऐसी गलतियों पर स्वयं व्यक्ति को भी आश्चर्य होता है। इस आश्चर्य का कारण यह है कि ऐसी गलतियों के जन्म का स्रोत अचेतन होता है। बोलने की भूलें के बहुत से उदाहरण हमें दैनिक जीवन में मिलते हैं। बोलने की भूल का एक अच्छा उदाहरण ब्राउन (Brown) ने दिया। ब्राउन के एक मित्र को अपने ऊपर काफी गर्व था तथा अपने ज्ञान-भण्डार को अन्य व्यक्तियों के ज्ञान-भण्डार से काफी बड़ा समझता था। एक बार उसे अपने मित्र के लेख पर बधाई देनी थी। उसे कहना था, "क्या मैं इस महान लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ।" ("May I offer a few modest remarks on this very brilliant paper?")। जबकि उसने कहा कि (May I offer a few brilliant remarks on this very modest paper) इस उदाहरण से स्पष्ट है कि उस व्यक्ति के अचेतन मन में इस लेख के प्रति महानता का नहीं बल्कि निम्नता का विचार था।
- (2) प्रायः ऐसा होता है कि हम अपने दैनिक जीवन में परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं तथा स्थानों के नामों को स्थायी या अस्थायी तौर पर भूल जाते हैं। कई बार तो बहुत कोशिश करने के बाद भी उनके नाम याद नहीं

आते हैं परन्तु अपने आप फिर बाद में याद आ जाते हैं। यह अस्थायी भूलने का कारण अर्द्धचेतन (subconscious) होता है। परन्तु स्थायी रूप से भूलना या लम्बे समय तक याद नहीं आने का कारण अचेतन (unconscious) ही होता है। नामों को भूलने के सामन ही हम अन्य बातों को भी भूलते रहते हैं जैसे किसी से किये गये वायदों का भूल जाना, पत्र को डाकखाने के पत्र-पटी में डालना भूलना, किसी से ली गई वस्तु को लौटाना भूलना आदि भी हमारे दैनिक जीवन में प्रायः होते रहते हैं। साधारणतः इन सभी तरह के भूलने की क्रिया का कोई स्पष्ट कारण हमें पता नहीं चलता है और हम इसे एक संयोगवश या निरर्थक होने वाली घटना समझकर उस पर ध्यान नहीं देते हैं परन्तु फ्रायड ने कहा है कि ये सभी तरह का भूलना निरर्थक एवं संयोगवश नहीं होते बल्कि वे सार्थक होते हैं और उनका कारण अचेतन या अर्द्धचेतन में होता है। फ्रायड ने इसी तरह के दुःखद घटना के कारण भूलने का एक उदाहरण इस प्रकार दिया है- फ्रैंक (Frank) जो फ्रांस का रहने वाला था भारतवर्ष में कुत्ता तालाब में गिर गया लेकिन तब भी वह कुत्ता पर डेला फेंकने का क्रम जारी रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि कुत्ता तालाब में डूबकर मर गया। इस दुःखद घटना का प्रभाव फ्रैंक के मन पर काफी पड़ा जिसके परिणामस्वरूप वह अपने देश के सुप्रसिद्ध बाजार का नाम जिसका नाम, 'POND' था यद्यपि कि फ्रैंक उस बाजार से काफी परिचित था, फिर भी जब उसका नाम उसे याद नहीं आया, तो इसपर उसे काफी आश्चर्य हुआ। यहाँ 'POND' नामक बाजार को भूलने का स्पष्ट कारण इस तालाब ( या Pond ) में हुई वह दुःखद घटना थी जिसके परिणामस्वरूप वह शब्द अचेतन में दमित हो गया था।

- ( 3 ) लिखने की भूलें भी हमारे दैनिक जीवन की सामान्य भूलों में से एक है। इस तरह की भूल में व्यक्ति लिखना कुछ चाहता है और लिख कुछ और देता है। लिखने की भूलों में इसके आलावा अन्य भूलें, जैसे अधिक शब्द लिख देना, सही शब्द के बदले विरपीत शब्द लिख देना, किसी महत्त्वपूर्ण शब्द का छूट जाना, बाद के शब्दों को पहले लिखना आदि सम्मिलित होती हैं। सामान्यतः ऐसी गलतियों का कारण लिखते समय ध्यान न देना या ध्यान का बँट जाना या भाषा-ज्ञान का अभाव माना गया है। परन्तु फ्रायड ने विश्लेषणात्मक सबूत देकर यह साबित कर दिया है कि लिखने की भूलें भी अचेतन की दमित इच्छाओं के कारण ही होती हैं। एक नर्स का किसी डॉक्टर से प्रेम हो गया था परन्तु डॉक्टर द्वारा इसे नापसन्द किये जाने के कारण उसे डॉक्टर को भूल जाना पड़ा। उसने डॉक्टर को एक पत्र लिखा जिसमें उसने 'doctor' के जगह पर 'Dear' लिखा इस भूल के माध्यम से नर्स ने डॉक्टर के प्रति अचेतन में संचित प्रेम प्रदर्शित किया।
- ( 4 ) छपाई की भूलें (misprints) भी हमारे जीवन में अक्सर देखने को मिलती है। अक्सर समाचार-पत्रों, पुस्तकों एवं विज्ञापनों में इस तरह की भूलें देखने को मिलती है तथा अनेक बाद इन गलतियों का सुधार

भी देखने को मिलता है। इन गलतियों से भी हमें अचेतन में दमित इच्छाओं एवं विचारों के संकेत मिलते हैं। एक बार लंदन के एक समाचार-पत्र में छपा कि सभी में "His Highness clown Prince" भी उपस्थित थे। 'clown' का अर्थ अंग्रेजी में 'जोकर' होता है। सचमुच में 'clown' के जगह 'crown' छपना था। अगले दिन समाचार-पत्र में क्षमायाचना के साथ गलती का सुधार किया गया और छपा, "The crow Prince" भी उपस्थित थे। यहाँ पुनः एक गलती हो गयी- "Crown Prince" के जगह "Crow Princ" ( कौआ राज कुमार ) छप गया। इस दुहराई गयी गलती से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेस के प्रायः सभी कर्मचारियों में "Crown Prince" के प्रति घृणा की भावना थी। शायद यही कारण है कि प्रेस के कर्मचारियों द्वारा "Crown Prince" के प्रति किये गये अपमानजनक सम्बन्धनों को सुधारा नहीं गया।

- ( 5 ) हमारे दैनिक जीवन में पहचानने की भूल भी एक महत्वपूर्ण भूल है। ऐसी भूलें किसी वस्तु, स्थान तथा व्यक्ति को पहचानने से संबंधित होती हैं। अक्सर देखा है कि हम किसी अपरिचित व्यक्ति को परिचित व्यक्ति या मित्र समझ बैठते हैं तथा किसी परिचित व्यक्ति या वस्तु के उपस्थित रहने पर भी हम उसे देख नहीं पाते हैं। पहचानने की इन दोनों तरह की भूलें अधिक सामान्य हैं और इनके द्वारा व्यक्ति के अचेतन में से संचित दमित इच्छाओं के बारे में हमें संकेत मिलते हैं। फ्रायड के अनुसार जब कोई व्यक्ति अपने मित्र या प्रेमपात्र को देखना चाहता है तो वह अपरिचित व्यक्ति को ही अपना मित्र या प्रेमपात्र समझ बैठता है।
- ( 6 ) अक्सर ऐसा देखा गया है कि हम वस्तुओं जैसे चाभी, महत्वपूर्ण कागज, रूमाल, कलम, डायरी आदि को इधर-उधर रख देते हैं, और समय पर जब उन्हें ढूँढते हैं तो वह वस्तु नहीं मिलती है। दैनिक जीवन की इन भूलों के पीछे भी अचेतन की दमित इच्छाएँ सक्रिय होती हैं। फ्रायड के अनुसार वस्तुओं को इधर-उधर रखकर उसके बारे में भूल जाने से यह संकेत मिलता है कि व्यक्ति में उस वस्तु को अपने सामने से हटा देने की प्रवृत्ति अधिक होती है क्योंकि ऐसा कर देने से उनकी कोई समस्याच या उलझन का समाधान हो जाता है। जोन्स ( श्रवदमे ) ने इस सम्बन्ध में एक काफी रोचक उदाहरण दिया है। उसने लिखा है कि जब उन्हें अधिक खाँसी आती है तो वे अपनी धूम्रपान-नलिका को भूल से गलत स्थान पर रख देते थे और काफी प्रयास के बावजूद भी वे उसका खोज नहीं कर पाते थे। परन्तु जब खाँसी समाप्त हो जाती थी तो धूम्रपान नलिका अति शीघ्र मिल जाती थी।
- ( 7 ) अक्सर ऐसा होता है कि हम चेतन रूप से जो करना चाहते हैं, उसके बदले में हम कोई दूसरी क्रिया कर बैठते हैं और जब इन गलतियों का हमें ज्ञान होता है तो उसका हमें कोई अर्थ ही समझ में नहीं आ पाता है।

जैसे, हम किसी व्यक्ति को 100 रूपये का नोट देना चाहते हैं परन्तु भूल से 500 रूपये का नोट दे देते हैं। हम अपने मित्र या परिचित व्यक्ति के यहाँ जाते हैं और अपना रूमाल, कलम, चश्मा आदि अनजाने में छोड़ आते हैं या कभी-कभी अपने मित्र से उनके कलम हस्ताक्षर करने के लिए ( या कुछ लिखने के लिए ) माँगते हैं और फिर उसे अपने जेब में रखकर चले आते हैं। इन सभी तरह की गलतियाँ जो अनजाने में होते दीख पड़ती हैं, के पीछे अचेतन की दमित इच्छाएँ प्रबल होती हैं। ब्रिल (Brill) ने इसका एक अच्छा उदाहरण दिया है- एक डॉक्टर के मन में अपने चाचा के प्रति तीव्र घृणा एवं द्वेष भाव अधिक थी। एक बार उसके चाचा भयंकर रूप से बीमार पड़ गये तो डॉक्टर ने भूल से 'डिजिटालिस' (Digitalis) नामक औषधी के जगह पर हायोसिन (Hyoscine) नाम की औषधी दे दी जिससे उसके चाचा की मृत्यु हो गयी।

- ( 8 ) व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ ऐसी सांकेतिक क्रियाएँ जैसे बैठे-बैठे पैर हिलाना, कलम या पेन्सिल के ऊपरी भाग दाँत से दबाना, चाभी के गुच्छे को नचाना, भाषण देते समय किसी खास शब्द को बार-बार दुहराना, आदि करता है। इन सांकेतिक क्रियाओं का अर्थ तो व्यक्ति खुद भी नहीं समझता है परन्तु फ्रायड के अनुसार निश्चित रूप से इन हरकतों द्वारा अचेतन की दमित इच्छाओं का संकेत मिलता है। फ्रायड ने एक बार यह देखा कि एक विवाहित महिला अपने ऊँगली से अँगुठी को बार-बार निकालती थी तथा भीतर कर लेती थी। फ्रायड द्वारा पुछने पर कि वह ऐसा क्यों कर रही है, उसने कहा, “ऐसी ही।” परन्तु विश्लेषण करने पर पता चला कि वह महिला अपनी पति को कुछ कारणों से तलाक (divorce) देना चाहती थी परन्तु समाजिक एवं नैतिक कारणों से वह ऐसा करना उचित नहीं समझती थी। फ्रायड के अनुसार अँगुठी को ऊँगली से खिसकाकर निकालने की क्रिया द्वारा पति को परित्याग करने तथा पुनः उस अँगुठी को ऊँगली के भीतर करने की क्रिया द्वारा नैतिक एवं सामाजिक बंधनों के कारण पति को परित्याग नहीं करने के विचारों का संकेत मिलता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि हमारे सामान्य जीवन की गलतियाँ या भूलें जो स्पष्टतः बेतुकी एवं निरर्थक दीख पड़ती हैं, सचमूच में निरर्थक नहीं होती है। इन भूलों एवं गलतियों द्वारा अचेतन मन की अतृप्त इच्छाएँ एवं विचारों की अभिव्यक्ति होती है। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से दैनिक जीवन की ऐसी भूलें महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक होती है।